कलीसिया अध्याय 1

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए प्रार्थना करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) ***(शान्त समय)*** **उत्पत्ति 22,24,27 और 28**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि आपने दिये गये अनुच्छेद (उत्पत्ति अध्याय 22, 24, 27 और 28) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(1) यूहन्ना 3:3,5**

स्मरण वचनों की नवीं श्रृंखला (श्रृंखला झ) "परमेश्वर के राज्य" के सन्दर्भ में है। पांच स्मरण वचनों के शीर्षक हैं:

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें। यूहन्ना 3:3,5
(2) बच्चों का राज्य में स्वागत करें। लूका 18:16-17।
(3) परमेश्वर के राज्य का प्रचार करें। मत्ती 24:14।
(4) परमेश्वर की सेवा करने से कभी पीछे न हटें। लूका 9:62।
(5) राज्य का विजयोत्सवः दानिय्येल 2:44

***मनन करें,* स्मरण करें और अवलोकन करें।**

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें। यूहन्ना 3:3,5। "मैं तुझ से सच सच कहता हूं यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। मैं तुम से सच सच कहता हूं जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

4	**शिक्षा** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टान्त)*** **बलवन्त का बांधा जाना**

मत्ती 12:29 में "बलवन्त के बांधे जाने का दृष्टान्त"
परमेश्वर के राज्य की स्थापना के बारे में बताता है।

"दृष्टान्त" एक स्वर्गीय अर्थ धरण किये हुए एक सांसारिक कहानी है। यह एक रोजमर्रा के जीवन से ली गयी या आत्मिक शिक्षा प्रदान करने लिए गढ़ी गयी कहानी है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य की सच्चाईयों को समझाने तथा लोगों के जीवन की वास्तविकताओं और उनके नये होने की ज़रूरत को पूरा करने के लिए सामान्य स्थल व रोजमर्रा के जीवन की घटनाओं का इस्तेमाल किया।
दृष्टान्तों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाले छः निर्देशों का प्रयोग करते हुए इस दृष्टान्त का अध्ययन करेगें (नियमावली 9 के परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 12:22-37, मरकुस 3:22-30 और लूका 11:14-23। मत्ती 12:28-29 में लिखा है, "परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। और कैसे कोई मनुष्य कियी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है, जब तक कि पहले वह उस बलवन्त को न बांध दे? तब वह उसका घर लूट लेगा।" लूका 11:20-22 में लिखा है, "परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकालता हूं तो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। जब बलवन्त मनुष्य हथियार बांधे हुए अपने घर की रखवाली करता है, तो उसकी संपत्ति बची रहती है। पर जब उससे बढ़कर कोई बलवन्त, चढ़ाई करके उसे जीत लेता है तो, उसके वे हथियार जिन पर उसे भरोसा था, छीन लेता है और उसकी सम्पत्ति लूटकर बांट देता है।"

---

1. <u>दृष्टान्त की प्राकृतिक कथा को समझें।</u>

परिचय। कहानी या दृष्टान्त को प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया है और दृष्टान्त का अर्थ इसी पृष्ठभूमी पर आधरित है।
चर्चा करें। अत कहानी में जीवन से जुड़ी सत्य बातें कौन सी है?
ध्यान दें।

यदि किसी राज्य में फूट पड़ी हो तो। वह राज्य नाश हो जाएगा, और इसी प्रकार से जो शहर या घराना आपसे में मतभेद रखता है वह दृढ़ता से खड़ा नहीं हो सकता। यह सत्य स्वयं अपने आप को प्रमाणित करता है और जिसके लिए ज़्यादा उल्लेख की आवश्यकता नहीं है। दुनिया का इतिहास बहुत से घरेलू युद्धों से भरा हुआ है जिसमें बहुत से देशों ने अपने आप बर्बाद हो गये। बहुत सी किताबों में लिखे उल्लेखों से प्रमाणित होता है कि कैसे परिवार आपसी व अन्दरूनी कलह की वजह से नाश हो गये थे।

एक चोर का किसी बलवन्त के घर में घुसना। वह घर में कुछ भी चुराने से पहले घर के मालिक को बांध देता है। यह सारे संसार में होता है और यह अपने आप में एक सच्चाई है। यह दृष्टान्त जीवन से जुड़ी हुए एक सच्ची घटना है जिसमें बहुत से तथ्य सम्मिलित हैं, और जो सारे संसार में कहीं भी घट सकती है।

---

2. दृष्टान्त के सन्दर्भ का मूल्यांकन करें और उसके घटकों या तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी" के सन्दर्भ में एक "परिस्थिति" और दृष्टान्त का "उल्लेख या अनुप्रयोग" शामिल हो सकता है। दृष्टान्त की *परिस्थिति* उस दृष्टान्त को कहे जाने के उपलक्ष्य को बता सकती है, या वह बता सकती है कि उन दृष्टान्तों को बताने के द्वारा किन परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। उपलक्ष्य या परिस्थिति का वर्णन हमेशा दृष्टान्त की कहानी के बताये जाने से पहले मिलता है और कहानी का उल्लेख या उसका अनुप्रयोग सामान्यतः कहानी बताने के बाद में पाया जाता है।
खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उल्लेख या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) मत्ती 12:22-24 में दिये गये दृष्टान्त की परिस्थिती ।

चमत्कार। जैसा कि मत्ती 12:2,10,14 में लिखा है, यह गद्यांश दर्शाता है कि यीशु अभी भी अपने विरोधियों के बीच में घिरे हुए हैं, खास तौर पर यहूदियों के अगुवों के बीच में, जिन्हें "फरीसियों और व्यवस्थापकों के नाम से जाना जाता है। वे एक दुष्टात्मा ग्रसित पुरुष को उसके पास ले आये जो देख और बोल नहीं सकता था। यीशु ने उसे चंगा किया और अब वह दुष्टात्मा ग्रसित व्यक्ति मुक्त हो गया और अब न वह अंध है और न ही गूंगा। यीशु के इस चमत्कार को देखकर दर्शकों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। वे इस घटना को देखकर हैरान हो गये, अर्थात इस अदभुत चमत्कार को देखकर लोग आश्चर्य चकित हुए और उन पर भय छा गया।

मसीह। हालांकि बहुत से लोगों ने इस बात को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया था कि यह यीशु पुराने नियम में प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह हो सकता है, लेकिन उनमें खुले आम यह कहने की हिम्मत नहीं थी, क्योंकि वे मसीह के विरोधियों अर्थात फरीसियों से डरे हुए थे। इसलिए उन्होंने यह सवाल खड़ा किया, "क्या यह दाऊद की सन्तान हो सकता है?" मसीह की सेवकाई के दौरान, दाऊद के पुत्र का अर्थ मसीह से था। यह अपेक्षा 2शमूएल 7:12-14 और 1इतिहास 17:11-14 पर आधरित थी, जिसमें नातान नबी ने भविष्यद्वाणी की कि दाऊद का एक वंशज परमेश्वर के राज्य की राजगद्दी पर सदा काल के लिए विराजमान होगा (देखें मत्ती 21:15-16)। लेकिन लोगों को इस बात का बिल्कुल अनुमान नहीं था कि वह मसीह किस प्रकार का होगा। क्या वह मसीह केवल लोगों को सांसारिक समस्याओं से छुटकारा देगा, जैसे की शारीरिक बीमारी और विकलांगता से? या वह मसीह उन्हें रोम के राजनैतिक और सैन्य अत्याचारों से आज़ाद कराएगा, लेकिन पापों से नहीं? बहुत से लोगों के मन में, वरन् यीशु के चेलों के मन में भी एक तस्वीर स्पष्ट नहीं थी कि आने वाला मसीह कैसा होगा। उन्होंने सोचा कि मसीह स्वर्गीय राजा होने के बजाय एक सांसारिक राजा होगा (मत्ती 20:21, लूका 19:41-42, यूहन्ना 6:15,26,30,35, प्रेरितों 1:6)।

आरोप। फिर भी, यह प्रश्न कि यीशु ही लम्बे समय से अपेक्षित मसीह था फरीसियों और व्यवस्थापकों के लिए ज़हर के समान था। यरूशलेम से व्यवस्थापक केवल यीशु की बातों और उसके कामों को परखने के लिए आये थे (मरकुस 3:22)। अतः उन्होंने यीशु पर आक्रमण किया। पहले तो उन्होंने यीशु पर सीधे तौर पर आरोप लगाया और कहा कि वह सबत के दिन उन्हीं कामों को करता है जिन्हें करने की मनाही है (मत्ती 12:2,10)। लेकिन अब वे यीशु के पीठ पीछे बुराई कर रह थे कि वह शैतान की सहायता से दुष्टात्मा को निकालता है।

बालजबूब इकरौन का देवता था (2 राजा 1:1-6) और वह 'कैरियन-(फ्लाई का प्रभु है), जो उसे इस प्रकार की मक्खियों या बरैय्यों से सुरक्षा करने वाला बनाता है। नये नियम में उसे बालजबूब कहा गया है जिसका अर्थ सम्भवतः "गोबर का ईश्वर है", अथार्त् ऐसा नाम हैं जिससे घिन आती है। नये नियम में, यह नाम निश्चित तौर पर दुष्टात्माओं के राजकुमार अर्थात शैतान की ओर इंगित करता है जैसा कि हम मत्ती 12:24-27 और मत्ती 9:34 में तुलना इसे साबित करती है। यीशु की निन्दा करने वाले आरोप बहुत बुरे थे। विरोधियों ने आरोप में यह नहीं कहा कि शैतान एक बुरी आत्मा है और उसने जिसने यीशु पर अपने पापी प्रभाव को डाला है (मरकुस 3:30, यूहन्ना 8:48), लेकिन कहने लगे कि शैतान यीशु की आत्मा में बसा है (मत्ती 10:25)! यीशु के विरोधियों ने यीशु की निन्दा की, क्योंकि वे उसके चरित्रा व पफलदायी सेवकाई से डाह करते हैं। उसने यह बात बर्दाश्त नहीं होती थी कि वे अपने अनुयायियों और समाज पर अपने प्रभाव को खो रहे हैं।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 12:25 और 29 में दी गयी है।

(3) इस दृष्टान्त का उल्लेख व अनुप्रयोग मत्ती 12:29-37 में दिया गया है।
यीशु उन पर लगे हुए आरोपों का जवाब देते हैं।

मत्ती 12:25-26। यीशु पर लगाया गया आरोप निरर्थक था। यीशु ने उनसे कहां कि यह सोचना तो बिल्कुल बेतुका है कि शैतान अपने ही राज्य के खिलाफ चढ़ाई करेगा और अपने ही लोगों को मारेगा। शैतान कभी अपना विरोध नहीं करता, क्योंकि ऐसा करके वह अपने ही काम को नाश करेगा।

मत्ती 12:27। यीशु पर लगाया गया आरोप अनियमित और बेजान था। यीशु ने कहा कि फरीसियों के अनुयायी (जिन्हें फरीसियों की सन्तान कहा जाता है) साबित करते हैं कि पफरीसी गलत हैं। इन यहूदियों ने दावा किया कि उनके पास परमेश्वर के नाम में दुष्टात्माओं को निकालने की ताकत है। मत्ती 7:22 साबित करता है कि यह सम्भव था और इस प्रश्न पर चर्चा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी कि, क्या उन्होंने कभी ऐसा किया था।
इसलिए यदि अब ये वे कहते हैं कि यीशु शैतान की ताकत से दुष्टात्माओं को निकालते हैं तो वह अपने आप पर दोष लगाएंगे। लेकिन अगर वे कहते हैं कि शैतान को केवल परमेश्वर की सामर्थ्य से निकाला जा सकता है तो, वे अपने शिक्षकों अर्थात फरीसियों को दोषी ठहराते। दोनों ही तरह से उनके अनुयासियों द्वारा लगाये गये आरोपों से फरीसियों को शर्मिन्दगी ही होती!

मत्ती 12:28-30। यीशु पर लगाये गये आरोपों ने सत्य को अस्पष्ट करता है। यीशु कहते हैं कि फरीसियों के द्वारा लगाये गये आरोप वास्तविकता को छुपाने का प्रयास है! वास्तविकता तो यह है कि यीशु दुष्टात्माओं को शैतान की ताकत से नहीं, वरन प्रभु की आत्मा (पवित्र आत्मा, मत्ती 12:32) की शक्ति से निकालते हैं। उसकी सेवकाई के प्रारम्भ से ही, यीशु ने बीमारों को चंगा किया, कष्ट रोगियों को शुद्ध किया, मृतकों को जिलाया, पापों को क्षमा किया, विरोधियों के झूठे आरोपों को खण्डन किया और सभी लोगों में सुसमाचार सुनाया। इसी सन्दर्भ में वह दुष्टात्माओं को भी निकालता है। शैतान का प्रतिनिधित्व करने वाली दुष्टात्माएं निकाली जा रही हैं यह वास्तविकता अपने आप में साबित करती है कि, शैतान का राज्य बहुत असुरक्षित है। यीशु सिखाते हैं कि शैतान के राज्य के कांपने की सच्चाई, इस बात को साबित करती है कि उन्हें परमेश्वर के राज्य के आने का एहसास हो रहा है! वह कहता

है, “यदि मैं परमेश्वर की आत्मा के द्वारा दुष्टात्मा को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य में आ चुका है।

“परमेश्वर का राज्य” हमारे सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर की प्रभुता और यीशु मसीह के द्वारा हर एक मनुष्य और हर चीज पर अधिकार है। यह विशेष तौर पर वह प्रभुता है जिसे उसके लोग अपने हृदय में स्वीकार करते हैं और अपने जीवन में कार्य करने का अधिकार देते हैं। परमेश्वर का राज्य सबसे पहले उनके उ(ार के समय में, धरती पर एक कलीसिया के रूप में स्थापित होने में और समाज पर उनके द्वारा डाले जाने वाले प्रभाव के द्वारा उन पर प्रगट होता है। अन्त के समय में वह उन पर अपने आपको उनके उ(ार की पूर्णता और नये स्वर्ग और पृथ्वी की स्थापना करने में प्रगट होता है। यीशु कहते हैं कि परमेश्वर का राज्य, शैतान के राज्य में विजय प्राप्त करने की प्रक्रिया में है। परमेश्वर का राज्य वर्तमान वास्तवितकता है आने वाली सच्चाई नहीं है। यह एक प्रगतिशील सच्चाई है जिसकी सम्पूर्ण तस्वीर यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी के रूप में सामने आ जाएगी!

धरती पर अपनी पूर्ण सेवकाई में, यीशु अपने वचनों और कार्यों के द्वारा उन लोगों से शैतान को दूर कर रहा था जिन्हें वह अपनी जागीर समझता और जिन पर वह अपने भयावह नियन्त्रण को बना कर रखता था (दानिय्येल 10:13,20; लूका 4:5-7; 13:16)। अपने देहधारण, जंगल में शैतान की परीक्षाओं पर विजय पाने, उसके अधिकार से भरपूर वचनों के द्वारा जिसके द्वारा उसने दुष्टात्माओं को निकाला और अपनी सारी भौतिक गतिविधियों के द्वारा यीशु ने प्रगट किया कि वह शैतान को बांधने के लिए आया है (1यूहन्ना 3:8)! शैतान की शक्तियों को पूरी तरह से बांधने का काम (कम करने, वश में करने, और सीमित करने) यीशु मसीह की क्रूस पर मृत्यु द्वारा (यूहन्ना 12:32-32; कुलुस्सियों 2:15) और उसके पुनरूत्थान के द्वारा, उसके स्वर्गारोहण के द्वारा और उसके स्वर्गीय सिहांसन पर विराजमान होने के द्वारा पूरा हुआ था (प्रकाशितवाक्य 12:5,9-12)। इसलिए, पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक, यीशु मसीह और उसके चेलों ने शैतान को उसके “पात्रों” अर्थात मसीह पर विश्वास न करने वाले लोगों के प्राणों और शरीर से दूर कर दिया! शैतान के “बन्धन” चंगाईयों और सत्य के प्रचार से टूट गये।

मसीह और शैतान के बीच लड़ाई में, उदासीनता के लिए कोई स्थान नहीं है। यहां केवल दो ही महान साम्राज्य विद्यमान हैंः परमेश्वर का राज्य जिस पर यीशु मसीह एक राजा के रूप में राज्य करते हैं और संसार का राज्य जिसमें बुरे लोग रहते हैं और जिस पर शैतान एक राजकुमार के रूप में राज्य करता है (लूका 4:5-8; कुलुस्सियों 1:13; 1यूहन्ना 3:7-10)। इस संसार का हर एक जन इनमें से किसी एक साम्राज्य के सम्बन्ध रखता है। जिसके परिणाम स्वरूप यदि कोई व्यक्ति मसीह के साथ में घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं रखता, वह मसीह के विरोध में है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति मसीह के साथ है, तो वह एक सहकर्मी बन जाता है जो लोगों को मसीह का अनुयायी बनाने के लिए लोगों को इकट्ठा करता है। लेकिन यदि कोई जन मसीह के विरोधी है, तो वह लोगों को उनकी खोयी और बिखरी अवस्था में छोड़ देता है और वे शैतान का आसान शिकार बन जाते हैं।

मत्ती 12:31-32। यीशु के ऊपर लगाया गया आरोप क्षमा नहीं होगा। यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा नहीं की जाएगी। जब यीशु ने यह कहा कि लोगों का “हर एक प्रकार का पाप और निन्दा” क्षमा किया जा सकता है, तो वह ‘निन्दा’ के हर एक सामान्य भाव को परमेश्वर या

मनुष्य के खिलाफ इस्तेमाल की जाने वाली गुस्ताख भाषा, बदनामी और परमेश्वर के पवित्र नाम की निन्दा करने की बात कर रहे थे। उदाहरण के तौर पर दाऊद के व्यभिचार, बेईमानी और हत्या की क्षमा है (भजन 32 और 51)। लूका 7 में पायी जाने वाली पापिन स्त्री के अनेकों पापों की क्षमा है। उड़ाऊ पुत्र के बलवा करने वाली जीवन शैली की क्षमा है (लूका 15:13) पतरस के तीन बार प्रभु का इनकार करने तथा निन्दा करने की क्षमा है (मरकुस 14:71) और पौलुस द्वारा मसीही बनने से पहले दयारहित तरीके से मसीहियों पर अत्याचार करने की क्षमा है (प्रेरितों 26:9-11)। इन सभी लोगों ने अपने दिल की गहराई से पश्चाताप किया। क्षमा प्राप्त इस बात पर निर्भर करती है कि पापी जन क्षमा के मार्ग पर चलने के लिए इच्छुक हो। जो मनुष्य अपने हृदय को कठोर नहीं करता, वरन् जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा पर ध्यान लगाता है, उसके पाप कितने भी संगीन क्यों न रहे हों, उसे फिर भी क्षमा मिल सकती है।

लेकिन जो जन पवित्र आत्मा के विरूद्ध बोलता है, उसके लिए कोई क्षमा नहीं है। जब यीशु ने कहा कि 'पवित्र आत्मा की निन्दा' क्षमा नहीं की जाएगी, तब उसका इस शब्द 'निन्दा' का अर्थ विद्रोह करते हुए अनादर करना, प्रभु को कोसना, जिन चीजों को पवित्र ठहराया गया है उन्हें तुच्छ या अपवित्र जानना या उन चीजों के लौकिक होने या मनुष्य द्वारा रचे जाने का दावा करते हुए जो आदर परमेश्वर को मिलना चाहिए उसे परमेश्वर को प्रदान करना है। फरीसियों द्वारा की जाने वाली निन्दा का अर्थ यह था कि वे उन कामों को शैतान की शक्ति से किये जाने वाले कार्य बता रहे थे जिन्हें पवित्र आत्मा यीशु मसीह में होकर कर रहा था!

फरीसियों के पाप बढ़ते ही चले जा रहे थेः पहले जो उन्होंने पापियों और चुंगी लेने वालों के साथ मिलकर यीशु से प्रश्न पूछे (मत्ती 9:11) उसके बाद में उन्होंने उस पर यह आरोप लगाया कि वह इन कामों को करके कानून का उल्लंघन करता है (मत्ती 12:2)। उसके बाद में उन्होंने चुपके से उसे मारने की योजना बनायी (मत्ती 12:14)। और अब वे उसके पीठ पीछे सरे आप उसकी बदनामी कर रहे थे कि, वह पवित्र आत्मा की सहायता से नहीं वरन शैतान की आत्मा से यह सारे काम करता है (मत्ती 12:24)। इन फरीसियों में उनके पाप के प्रति उन्हें कोई दुःख नहीं था। धीरज धरने की बजाय, वे अपने हृदय को और अध्कि कठोर कर रहे थे। अपने पापों का अंगीकार करने की बजाय, वे यीशु मसीह को मारने की योजना बनाने लगे थे। इस तरह से अपने ही आपराधिक कामों और कभी क्षमा न की जा सकने वाली हृदय की कठोरता के कारण, वे अपने आप को नाश कर रहे थे। <u>उनके पाप बिल्कुल क्षमा योग्य नहीं थे क्योंकि वे कभी क्षमा की राह पर चलने के लिए तैयार ही नहीं थे।</u> एक चोर, व्यभिचारी और हत्यारे के लिए फिर भी आशा है। लेकिन जो व्यक्ति लगाता अपने मन को कठोर बनाएं रखता है उसके लिए कोई आशा नहीं है। उसके लिए आशा इसलिए नहीं है क्योंकि उसने पहले ही यह मन बना लिया है कि वह पवित्र आत्मा की कोई भी बात नहीं सुनेगा। उसने पहले ही निश्चय कर लिया है कि वह पवित्र आत्मा की चेतावनियों और उसके अनुरोध को नहीं सुनेगा। उसने आपको नरक जाने वाले मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया है। उसने ऐसा पाप किया है जिसका अन्त केवल मृत्यु है (1यूहन्ना 5:16)।

एक ओर तो, बाइबल हमें जीवित परमेश्वर से अलग रहने के विरूद्ध आगाह करती है। बाइबल हमें सतर्क कराती है कि यदि कोई व्यक्ति लगातार अविश्वास करता और बुरे काम करता रहता है, तो उसके ऊपर परमेश्वर से दूरे होने का खतरा मण्डराता रहता है (इब्रानियों 3:12-13; 6:4-8)। बाइबल

स्पष्ट तौर पर बताती है कि यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर पाप करता, जो यीशु को अपने पैरों तले रौंदता और परमेश्वर की पवित्र आत्मा के अनुग्रह का अपमान करता है, वह परमेश्वर के भयानक न्याय का सामना करने के खतरे में है(इब्रानियों 10: 26-31)। दूसरी ओर, बाइबल के वचनों को यह कहते हुए बिगाड़ना नहीं चाहिए कि इसका मतलब यह है कि बपतिस्मे के बाद किये गये पापों का पश्चाताप सम्भव नहीं है।

क्योंकि जो कोई मन से पश्चाताप करता है, चाहे उसके अपराध कितने भी ज़्यादा शर्मिन्दा करने वाले क्यों न हो, उसे किसी भी स्थिति में निराश होने की ज़रूरत नहीं है (यशायाह 1:18; 1यूहन्ना 1:9)। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाना चाहता है, तो वह परमेश्वर की ओर फिरे। परमेश्वर उस व्यक्ति से कभी मुंह नहीं फेरते जो क्षमा के मार्ग पर चलता है और जो पवित्र आत्मा की आवाज़ पर ध्यान लगाता है (यूहन्ना 6:37)।

लेकिन मसीहियों को उदासीन होने से बचने के लिए कहा गया है। पवित्र आत्मा की निन्दा करना पाप की धीमी प्रक्रिया का परिणाम होता है। पाप की धीमी प्रक्रिया पवित्र आत्मा को शोकित करने से प्रारम्भ होती है। एक जन पवित्र आत्मा को अपने पापों के कारण शोकित कर सकता है (इफिसियों 4:30)। लगातार पश्चाताप करने से इनकार करने के द्वारा हम पवित्र आत्मा का सामना करते हैं (प्रेरितों 7:51)। और लगातार पवित्र आत्मा के कामों का सामना करने से पवित्र आत्मा को बुझाने (1थिस्लुनिकियों 5:19) या पवित्र आत्मा की निन्दा करने की ओर कदम बढ़ते हैं (मत्ती 12:31-32)। मसीही लोग इब्रानियों 3:7-8 पर ध्यान लगाकर क्षमा ने किये जाने पाप से दूर रहते हैं, "पवित्र आत्मा कहता है 'यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय में किया था'।"

मत्ती 12:33-37। यीशु पर लगे आरोप , आरोप लगाने वालों की दुष्टता को प्रदर्शित करता है। यीशु दिखाते हैं कि उसके खिलाफ फरीसियों द्वारा लगाये गये गम्भीर आरोप फरीसियों के असली चरित्रा को प्रगट करते हैं। जब यीशु ने कहा कि, यदि पेड़ को अच्छा 'कहो' तो उसके पफल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा 'कहो' तो उसके फल को भी निकम्मा कहो, तो उसका अर्थ यह था कि केवल एक अच्छा पेड़ ही अच्छा फल ला सकता है लेकिन बुरा पेड़ कभी अच्छा फल नहीं ला सकता। इसलिए, जैसा व्यक्ति मन में सोचता है वही बाहर भी प्रगट होता है। यीशु कहते हैं कि जिस प्रकार से एक पेड़ उसके फलों से पहिचाना जाता है, वैसे ही, एक व्यक्ति का हृदय और उसका वास्तविक स्वभाव उसकी बातों और उसके कार्यों से पहिचाना जाता है। फल और पेड़ एक दूसरे से जुड़े हैं। यह कहना कि यीशु की सेवकाई, उदाहरण के लिए दुष्टात्माओं को निकालने की सेवकाई, अच्छी है, लेकिन वह बुरा और दुष्टात्मा ग्रसित है, आपस में विरोधात्मक है। यह असम्भव है। यीशु आत्मा से परिपूर्ण है और वह भले ही पफल लाता है। ठीक इसके विपरीत बात फरीसियों के लिए सत्य है: वे बुरे पफल, उदाहरण के लिए, दूसरों की निन्दा करना, उत्पन्न करते हैं। इससे यह साबित होता है कि उनके हृदय बुरे हैं (मत्ती 7:15-20)।

एक मनुष्य के हृदय को भण्डार-गृह कहा गया है। जो कुछ वह अपने भण्डार-गृह से बाहर निकालता है, चाहे वह भला हो या बुरा, बहुमूल्य हो या तुच्छ, इस बात पर निर्भर करता है कि उसके भण्डार-गृह में क्या भरा हुआ है! यीशु हर एक व्यक्ति को उसके विचारों, उसकी बातों और उसके कामों के लिए जिम्मेदार व उत्तरदायी ठहराते हैं (देखें. गलातियों 6:5)! हालांकि यह पूरी तरह से सत्य

है कि कोई भी व्यक्ति अपने हृदय को स्वयं नहीं बदल सकता, तो यह भी उतना ही सत्य है कि प्रभु के अनुग्रह से एक व्यक्ति परमेश्वर के पास जा सकता है, जो कि हमारे हृदय और जीवन को नया बना सकता है। वह हमेशा लोगों को वे चीजें देने के लिए इच्छुक रहता है जो लोग उससे मांगते हैं। अगर उन्हें कुछ नहीं मिलता है तो यह उनकी अपनी गलती है (मत्ती 7:7; 11:28-30)। एक व्यक्ति केवल विश्वास द्वारा प्रभु के अनुग्रह से ही उद्धार पाता है। लेकिन उसके उद्धार के बाद, उसका विश्वास उसके शब्दों और उसके कामों द्वारा प्रगट होता है। लोगों के काम व उनकी बातें ही निर्धरित करेगीं कि भविष्य में उद्धार पाने वालों को किस स्तर की महिमा मिलेगी या नाश होने वालों को किस स्तर का दण्ड मिलेगा।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने कभी नहीं चाहा कि बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग को कोई न कोई आत्मिक अर्थ हों। प्रासंगिक विवरण वे विवरण हैं जो किसी दृष्टान्त की कहानी के मुख्य विषय, शिक्षा या उसके मुख्य बिन्दू पर ज़ोर डालते हैं। इसलिए हमें ऐसा नहीं समझना चाहिए कि कहानी में कही गयी हर बात का कोई न कोई आत्मिक मतलब होता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में बतायी गयी कौन सी बात वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

विभाजित राज्य अवश्य ही नाश हो जाएगा। अपने आप में विभाजित कोई भी शहर या घर कभी स्थिर नहीं रह सकता। यह विवरण प्रासंगिक है, क्योंकि वह यह कहते हुए कहानी की मुख्य शिक्षा पर जोर देता है कि परमेश्वर का राज्य कभी आपस में बंटा नहीं हो सकता। वरन परमेश्वर का राज्य शैतान के राज्य और उसके कामों का विरोध करता है। जिस प्रकार से शैतान अपने ही राज्य का विरोध नहीं करता, वरन परमेश्वर के राज्य का विरोध करता है, उसी प्रकार से मसीह शैतान के राज्य का विरोध करता और शैतान के राज्य पर विजय प्राप्त करता है।

बलवन्त के घर में घुसकर बलवन्त को बांध देना। यह विवरण भी प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु ने बताया कि उसके प्रथम आगमन का एक उद्देश्य बलवन्त को बांध्ना था (इब्रानियों 2:14; 1यूहन्ना 3:8)! यीशु मसीह शैतान को इस तरह से बांध देते हैं कि वे जाति जाति के लोगों को फिर कभी न तो धेखा दे सकते हैं और न ही उन्हें सुसमाचार सुनने और विश्वास करने से रोक सकते हैं; देखें, यूहन्ना 12:31-32; प्रकाशितवाक्य 12:5,7-11; 20:1-3)।

बलवन्त के घर में घुसकर चोरी करना। यह उल्लेख न्यायोच्चित है, क्योंकि यूहन्ना 12:30-33 और कुलुस्सियों 1:13 हमें शिक्षा देते हैं कि प्रभु यीशु मसीह शैतान के राज्य में से बहुत से लोगों को बहुत से देशों में से चुराने और उन्हें निकाल कर अपने राज्य में लाने की प्रक्रिया में हैं।

---

4. इस दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश कहानी के उल्लेख या अनुप्रयोग या खुद कहानी में ही पाया जाता है। जिस तरह से स्वयं यीशु ने दुष्टान्त का अर्थ बताया और उसका इस्तेमाल किया ठीक उसी प्रकार से, उसी को उदारहण के तौर पर सामने रखते हुए हम सीखते हैं कि हमें दृष्टान्तों का किस प्रकार अर्थ निकालना चाहिए। दुष्टान्त का प्रायः एक मुख्य संदेश होता है, अर्थात उसमें किसी एक बिन्दू पर ज़ोर दिया गया होता है।

इसलिए हमें कहानी ही हर पंक्ति का अर्थ ढूंढ़ने का प्रयास नहीं करना चाहिए, वरन हमें यह देखना चाहिए कि उस कहानी का मुख्य निचोड़ क्या है।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 12:29 में बांधे बलवन्त मनुष्य का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य की स्थापना करने वाला दृष्टान्त है।"

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार से है। "शैतान के ऊपर यीशु की विजय यह प्रगट करती है कि परमेश्वर का राज्य यीशु के पहले आगमन के साथ साथ आ चुका हैं। परमेश्वर के राज्य ने अपनी उपस्थिति का महसूस करवाया है और वह शैतान के राज्य पर विजय प्राप्त करने की प्रक्रिया में है।"

मत्ती 6:10 में यीशु मसीह ने मसीहियों को प्रार्थना करना सिखायाः "तेरा राज्य आये।" परमेश्वर के राज्य का निश्चित तौर पर आना परमेश्वर के राज्य की एक बुनियादी विशेषता है। परमेश्वर के राज्य के असली लोग इस बोध के साथ जीवन व्यतीत करते हैं कि परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के पहली आगमन के साथ इस संसार में आ चुका है और अब यीशु मसीह सारे जगत के सिंहासन पर विराजमान हैं। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का राज्य उसके दूसरे आगमन तक बना रहेगा, अर्थात जब परमेश्वर के राज्य का सिद्ध स्वरूप सबके सामने प्रगट होगा।

पुराने नियम की एक बुनियादी शिक्षा भविष्य में आने वाला परमेश्वर का राज्य भी है (उदाहरण दानिय्येल अध्याय 2 पद 7)। दानिय्येल 2:44 में लिखा है, "उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा, जो अनन्तकाल तक न टूटेगा और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूरचूर करेगा और उनका अन्त कर डालेगा, और वह सदा स्थिर रहेगा।"

दानिय्येल 7:13-14 में लिखा है "मैं ने रात में स्वपन देखा और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता महिमा और राज्य दिया गया, कि देश देश और जाति जाति के लोग भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"

नये नियम की एक मूलभूत शिक्षा यह है कि परमेश्वर का राज्य आ चुका है और वर्तमान काल की वास्तविकता है। यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन पर यह कहते हुए अपनी सेवकाई का प्रारम्भ किया था कि, "समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और

सुसमाचार पर विश्वास करो!" (मरकुस 1:15)। उसके प्रथम आगमन पर शैतान और शैतान के अन्धकार के राज्य से लौकिक लड़ाई जीत ली गयी (यूहन्ना 12:31-32; कुलुस्सियों 2:15)।

मसीह का प्रथम आगमन परमेश्व के राज्य की स्थापना की शुरूआत थी। मसीह के प्रथम आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन तक, एक आत्मिक युद्ध चल रहा है। शैतान (प्रकाशितवाक्य 2) और उसके सहायक; राजनैतिक मसीही विरोधी, एक धार्मिक झूठा भविष्यद्वक्ता (प्रकाशितवाक्य 13), वैश्याएं (प्रकाशितवाक्य 17) और उनके सभी मानवीय सहायक (प्रकाशितवाक्य 19:19) मिलकर मसीह के खिलाफ युद्ध करते हैं। लेकिन मसीह उन पर विजय प्राप्त करेगा, क्योंकि वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (प्रकाशितवाक्य 17:14)। केवल गैर मसीही लोग ही जाने अनजाने में आत्मिक युद्ध में शामिल नहीं हैं बल्कि सारे मसीही जन भी आत्मिक युद्ध में शामिल हैं। मसीह के पश्चाताप के लिए किये गये आत्म बलिदान और उनके सुसमाचार प्रचार करने के कारण मसीही लोग भी शैतान और उसके सहायकों पर विजय प्राप्त करते हैं (इफिसियों 6:10-13; प्रकाशितवाक्य 12:10-11)। वर्तमान काल में यीशु मसीह परमेश्वर के राज्य के राजा है (मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-22; फिलिप्पियों 2:9-11; प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16)! परमेश्वर के राज्य के सच्चे नागरिक वे लोग हैं जिन्होंने प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया है और अब वे यीशु मसीह को अपना प्रभु और राजा मानते हुए समर्पित जीवन व्यतीत करते हैं (कुलुस्सियों 1:13; 1कुरिन्थियों 12:3)। मसीह और मसीहियों ने मिलकर (मत्ती 12:30) शैतान के "सामान" को चुरा लिया है, जो कि अब भी उसके अधिकार में रहने वाले लोग हैं। मसीहियों ने उन्हें अपनी प्रार्थनाओं (लूका 22:31-32), उनके प्रेम (1यूहन्ना 3:16-19) और उनके सुसमाचार की घोषणा करने के द्वारा चुरा लिया है। जिस तरह मसीह का प्रथम आगमन धरती पर परमेश्वर के राज्य की शुरूआत और स्थापना है, उसका दूसरा आगमन परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता है (मत्ती 25:34; इफिसियों 1:10) 1कुरिन्थियों 15:28; प्रकाशितवाक्य 11:15)।

परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए सारे कामों को करते हैं। और जब उन सभी के पूरा होने का समय आयेगा तो वह स्वर्ग और पृथ्वी की सारी चीजों को एकत्रित करके उन सबको एक के अर्थात मसीह के अधीन कर देगा। (इफिसियों 1:10-11 तथा 1कुरिन्थियों 15:24-26)!

---

5. दृष्टान्त की तुलना दूसरे सामान्तर दृष्टान्तों और बाइबल के तुलनात्मक अनुच्छेदों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान होते हैं जिनकी तुलना आपस में की जा सकती है। इस तरह से, सारे दृष्टान्तों में सिखाई गयी शिक्षा बाइबल के अन्य दृष्टान्तों अनुच्छेदों में सिखाई गयी शिक्षा से मेल खाती है। बाइबल में से ऐसे महत्वपूर्ण पद को ढूंढ़ें जिससे हमें दृष्टान्त के अर्थ को समझने में सहायत मिल सके। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ या व्याख्या की जांच बाइबल में दी गयी सीधी शिक्षा के साथ करें।

पढ़ें। 1यूहन्ना 3:8; लूका 10:18-20; यूहन्ना 12:31-32 ; कुलुस्सियों 1:13; 2:15; कुलुस्सियों 1:13; 2:15 ; प्रकाशितवाक्य 12:5-12 और 20:1-3

खोजें और चर्चा करें। शैतान को बांधने के बारे में नया नियम हमें क्या शिक्षा प्रदान करता है?

ध्यान दें।

(1) पुराने नियम के दौरान अन्धकार की शक्तियों को अधिकार।

सम्पूर्ण पुराने नियम में हम देखते हैं कि ज्यादा यहूदियों ने ही उद्धार प्राप्त किया था जबकि अन्यजातियां अन्धकार की शक्तियों की गुलामी में ही रहीं (दानिय्येल 10:13,20-21) अर्थात परमेश्वर ने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया (प्रेरितों 14:16; रोमियों 5:25; 2कुरिन्थियों 4:4)। इस तरीके से देखा जाएं तो शैतान ने उन जातियों को "धोखा" दिया।

लेकिन पुराने नियम में पहले ही, परमेश्वर ने मसीह से प्रतिज्ञा कर दी थी कि "जाति जाति के लोग उसकी सम्पत्ति हो जाएगें और दूर दूर के देश उसकी निम भूमि बन जाएंगे(उत्प. 12:3 भजन 2:8 72: 8-11,17)। भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की कि मसीह "जाति जाति के लिए ज्योति ठहराऊंगा कि उसका उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।" (यशायाह 49:6)। शैतान द्वारा लोगों को बहकाने के कारण, जो अन्धकार जाति जाति पर छाया रहा वह लगातार बना न रहेगा।

(2) पुराने नियम के दौरान अन्धकार की शक्तियों को अधिकार।

मसीह के प्रथम आगमन के दौरान, मसीह से नियत उद्देश्य "शैतान के कामों को नाश करने" के साथ आये थे। (इब्रानियों 2:14; 1 यूहन्ना 3:8)। वह शैतान को "बांधने" के लिए आया (मत्ती 12:29 और प्रकाशितवाक्य 20:1-3)। मत्ती 12:29 में वह कहता है कि "कैसे कोई किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है, जब तक कि वह पहले उसे बलवन्त को बांध न ले ?तब वह उसका माल लूट लेगा।" यही शब्द "बांधने" का इस्तेमाल मत्ती 12:29 और प्रकाशितवाक्य 20:2 में मूल भाषा में भी किया गया है।

इसका अर्थ उसकी बुरी शक्तियों को "वश में करना" और "सीमित करना" है ताकि वह उन कामों को आगे न कर सके जो वह पहले करता थाः अर्थात संसार भर में जाति जाति के लोगों को बाइबल के परमेश्वर के बारे में सुनने और परमेश्वर के राज्य का नागरिक बनने से दूर रखता है (लूका 8:12)।

मसीह ने जंगल में शैतान की परीक्षाओं पर विजय पाकर शैतान को बांध लिया (मत्ती 4:1-11)।

मसीह ने दुष्टाआत्मा ग्रसित लोगों में से आत्मा दुष्टात्मा निकालने के द्वारा शैतान को बांध दिया। उसने अपने चेलों व सेवकों को भी शैतान को बांधने का अधिकार दिया और उन्होंने भी दुष्टात्मा को निकाला। यीशु ने शैतान की इस पराजय का लूका 10:18 में कुछ इस तरह से उल्लेख किया, "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो मैं ने तुम्हें.....शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कभी हानि न होगी। तौभी इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।" यीशु के कहने का अर्थ था कि जब चेले लोगों में से दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे, तो मसीह ने उनके स्वामी शैतान को अधिकार अर्थात अपने सिंहासन से गिरते हुए देखा। शैतान का गिरना बिल्कुल चमकती हुई बिजली के समान था, क्योंकि चेलों ने इस विजय की अपेक्षा नहीं की थी और न ही शैतान को इस तरह हार जाने की आशा थी। जो काम यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर प्रारम्भ हो गया था वही काम प्रभु यीशु के दूसरे आगमन तक भी जारी रहेगा। उसके बाद शैतान को नरक में डाल दिया जाएगा।

मसीह ने शैतान को उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होने के द्वारा बन्दी बना लिया। यूहन्ना 12:31-32में, यीशु ने कहा " अब इस संसार का न्याय होता है, अब

इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा; और यदि मैं पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींच लूंगा।" यीशु यहां पर अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होने के बारे में बताते हैं। उद्धार के इतिहास में घटित ये घटनाएं "इस दुष्ट संसार का न्याय है"। दुष्ट संसार में वे लोग आते हैं जो यीशु का विरोध किया, उन्हें अस्विकार किया, धोखा दिया और उन पर दोष लगाया। "संसार" के अन्तर्गत समाज के सारे बुरे लोग, मानवीय सरकारें, वे दुष्टआत्माएं आती हैं जो बाइबल के परमेश्वर, उसके अभिषिक्त लोगों, और उसके लोगों अर्थात मसीहियों की विरोधी हो गयी हैं, आते हैं।

मृत्यु और पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होने के परिणाम स्वरूप दो समकालिक घटनाएं सामने आयीं: शैतान का निकाला या भगाया जाना तथा लोगों का मसीह की ओर आकर्षित होना। एक तरफ तो, यीशु मसीह ने शैतान को उसके अधिकार से अर्थात इस संसार में रहने वाले बुरे लोगों पर हुकुमत करने के अधिकार से बेदखल कर दिया। शैतान इस संसार का राजा कभी था ही नहीं, और मत्ती 4:5-6 में किया गया उसका दावा (हम यूहन्ना 8:44 भी देखें) बिल्कुल झूठा है। शैतान ज्यादा से ज्यादा इस संसार में रहने वाले बुरे लोगों का राजकुमार था। यह राजकुमार और उसकी बुराई का क्षेत्र यीशु मसीह के सारे जगत पर राजकीय अधिकार से बहुत नीचे है(मत्ती 28:18)!

लेकिन दूसरी ओर, यीशु मसीह सारे लोगों को अपनी ओर खीच रहा है। उसके बलिदान और प्रायश्चित से, उसने बहुत से लोगों को अपने पास "खींच" लिया। "खींचने" का अर्थ है उनके भीतरी मनुष्य को खींचना, आकर्षित करना, उन्हें जीतना और उन्हें इकट्ठा करना (यूहन्ना 6:44; 12:32)। ये दो घटनाएं सामकालिक तौर पर होने ही रहती हैं। जाति जाति के लोगों को अपने ओर खींचकर, उन देशों के लोगों को शैतान के चंगुल से छुड़ाता है! सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा, मसीह हर देश के लोगों को अपनी ओर खींच रहा है। क्रूस पर मृत्यु के द्वारा मसीह ने अपने शत्रु को निहत्था बनाकर उसके अधिकार को छीन लिया और उस पर विजय प्राप्त कर ली (कुलुस्सियों 2:15)। उसके पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने के परिणाम स्वरूप शैतान और उसके साथी दुष्ट स्वर्गदूतों को, स्वर्ग से निकाल कर धरती पर फेंक दिया था (प्रकाशितवाक्य 12:5-12)।

इस तरह से, शैतान का *बांधा जाना* (प्रकाशितवाक्य 20:2), उसे *निहत्था किया जाना* (कुलुस्सियों 2:15), उसका *गिरना* (लूका 10:18) या उसका स्वर्ग से निकाला जाना (प्रकाशितवाक्य 9:1) ये सब मसीह के प्रथम आगमन से जुड़ी घटनाएं हैं। उसकी प्रथम आगमन के दौरान, यीशु मसीह ने उस बलवन्त पर आक्रमण किया और उसके हथियारों को छीन लिया और उसकी सम्पत्ति को बांट दिया है। नये नियम से लेकर उसके दूसरे आगमन तक धरती पर शैतान की शक्ति (उसका प्रभाव) "कैद" (सीमित, कम करना, वश में करना) जिससे कि वह सुसमाचार प्रचार को रोकने में, देश के असंख्य लोगों के मन परिवर्तन करने, सारे देशों में कलीसियाओं का निर्माण करने और परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने से रोकने में असमर्थ है। इसी कारण प्रकाशितवाक्य 20:2-3 में लिखा है, कि शैतान को 1000 वर्षों (यह पूरे नये नियम का काल है अर्थात मसीह के प्रथम आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन तक) के लिए कैद कर दिया गया है ताकि वह लोगों को भरमा न सके। लेकिन वह इस तरीके से बन्दी नहीं है कि वह सारे संसार पर अपना कोई प्रभाव न डाल सके, या इसका अर्थ यह नहीं है कि वर्तमान बुरा संसार मसीही बन जाएगा, या फिर यह दुष्ट संसार एक सिद्ध समाज में

तबदील हो जाएगा। वह केवल इस तरह से बन्दी हुआ है कि वह देशों को भरमा नहीं सकता है। संसार के लोग सुसमाचार के प्रति प्रतिउत्तर देने के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं।

हालांकि शैतान पहले से ही हारा हुआ शत्रु है, लेकिन यह बात स्पष्ट है कि परमेश्वर ने अभी उसे धरती से दूर नहीं किया है। यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन पर ही अर्थात जब न्याय का दिन आयेगा, यीशु मसीह शैतान और उसके साथियों को नरक में डालेगें (प्रकाशितवाक्य 20:7–15)।

---

6. दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाओं को मूल्यांकन।

चर्चा करें। दृष्टांन्तों की मुख्य शिक्षाएं या संदेश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या समझाने के लिये या विश्वाश करने की शिक्षा दी और उसने हमसे क्या बनने या करने के लिए कहा?
ध्यान दें।

(1) परमेश्वर का राज्य मसीह के प्रथम आगमन पर ही स्थापित हो गया था।

पुराने नियम का काल जिसमें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता शामिल थे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ समाप्त हो जाता है और नये नियम का दौर यीशु मसीह के प्रथम आगमन के साथ प्रारम्भ होता है(मत्ती 11:13)। उस दिन से आज तक स्वर्ग के राज्य पर ज़ोर हुआ जाता है और बल्वन्त उसमें प्रवेश करते हैं (मत्ती 11:12)।

परमेश्वर के राज्य ने अपनी उपस्थिति यीशु, प्रेरितों और मसीहियों के चमत्कार(प्रेम) और प्रचार (सत्य)के द्वारा दर्ज की। परमेश्वर के राज्य की प्रगति निम्नलिखित तथ्यों में प्रमाणित है:

- परमेश्वर के राज्य का सुसमाचान सारे जगत में प्रचार किया जाएगा (मत्ती 24:14)।
- मसीही लोग ससांर के हर समुदाय में " बड़े बड़े काम" (यूहन्ना 14:12) कर रहे हैं।
- आज सारे संसार भर में लाखों लोग शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की कैद से छुड़ाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर रहें हैं।
- इन परिवर्तित मसीहीयों का जीवन प्रगट करते हैं कि यीशु मसीह वास्तव में इस दुनिया का राजा है!

नये नियम में प्रभु यीशु मसीह द्वारा अनगिनत संदेश परमेश्वर के राज्य के विषय में दिये गये हैं। परमेश्वर का राज्यः

- वर्तमान वास्तविकता है
- प्रगतिशील वास्तविकता है
- भविष्यसम्बन्धी सिद्ध वास्तविकता है!

यीशु मसीह ने परमेश्वर के राज्य के बारे में लगभग पचास से ज्यादा दृष्टान्त बताएं हैं।(नियमावली 9, परिशिष्ट 2 देखें)

(2) यीशु मसीह के प्रथम आगमन से ही शैतान को बांध दिया गया है।
उसकी मृत्यु, पुनरूत्थान और उठाये जाने तथा स्वर्ग के सिंहासन पर विराजमान होने के द्वारा, यीशु मसीह ने शैतान को "बांध" दिया है, अर्थात उसकी सामर्थ को *सीमित* कर दिया है, ताकि वह भविष्य में लोगों को धोखा न दे सके। शैतान संसार के किसी भी देश और जाति में मसीही कलीसिया का निर्माण होने से नहीं रोक सकता है। लेकिन,मसीह ने अभी शैतान को इस ससांर से बाहर नहीं निकाला है। शैतान और उसकी दुष्टात्माएं अभी भी दुनिया के लोगों को अच्छा खासा नुकसान पहुंचा सकते हैं! मसीह पर पूरी तरह से निर्भर होने के लिए, मसीहीयों को संसार में रहते हुए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मसीही की जीत का लगातार करना होगा।

हर एक मसीही मसीह उद्धार के निमित्त द्वारा पूरे किये गये कामों के आधार पर शैतान पर विजय प्राप्त करता है (प्रकाशित वाक्य 12:11), जिसके कारण शैतान के हाथ से वे लोग निकल जाते हैं जो कभी उसके कब्जे में हुआ करते थे। अपनी प्रार्थनाओं, प्रचार और वचन की शिक्षाओं और समाज में अपने बड़े बड़े कामों के द्वारा, मसीही लोग शैतान को बांध रहे और उससे उन लोगों को छुड़ा रहे हैं जिन पर पहले वह अधिकार किया करता था।

<u>मसीह और शैतान के बीच इस लड़ाई में उदासीन होना असम्भव है।</u> जो कोई यीशु के "साथ" नहीं है वह मसीह के "विरूद्ध" है (मत्ती 12:30)! सारे लोग या तो इकट्ठा होते हैं या तितर बितर होते हैं। जितने लोग परमेश्वर के राज्य में मसीह कामों के द्वारा लोगों को इकट्ठा करते हैं वे *मसीह के साथ* है। और जितने लोग जो लोगों को उनकी खोयी हुई दशा में शैतान का शिकार होने के लिए छोड़ देते हैं, वे *मसीह के विरूद्ध* हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रिया)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*** या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. **<u>समर्पण</u>**: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "बलवन्त जन के बांधे जाने का दृष्टान्त" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को –<u>प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।</u>
3. **<u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।</u> उत्पत्ति 32,37,39, और 45** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **<u>याद करें।</u> (2) "परमेश्वर के राज्य में बच्चों"** । रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. **<u>बाइबल अध्ययन।</u> रोमियों 1:1-17** के आधर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
   ध्यान दें।
6. **<u>प्रार्थना।</u>** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का <u>अद्यपन करें।</u> जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।